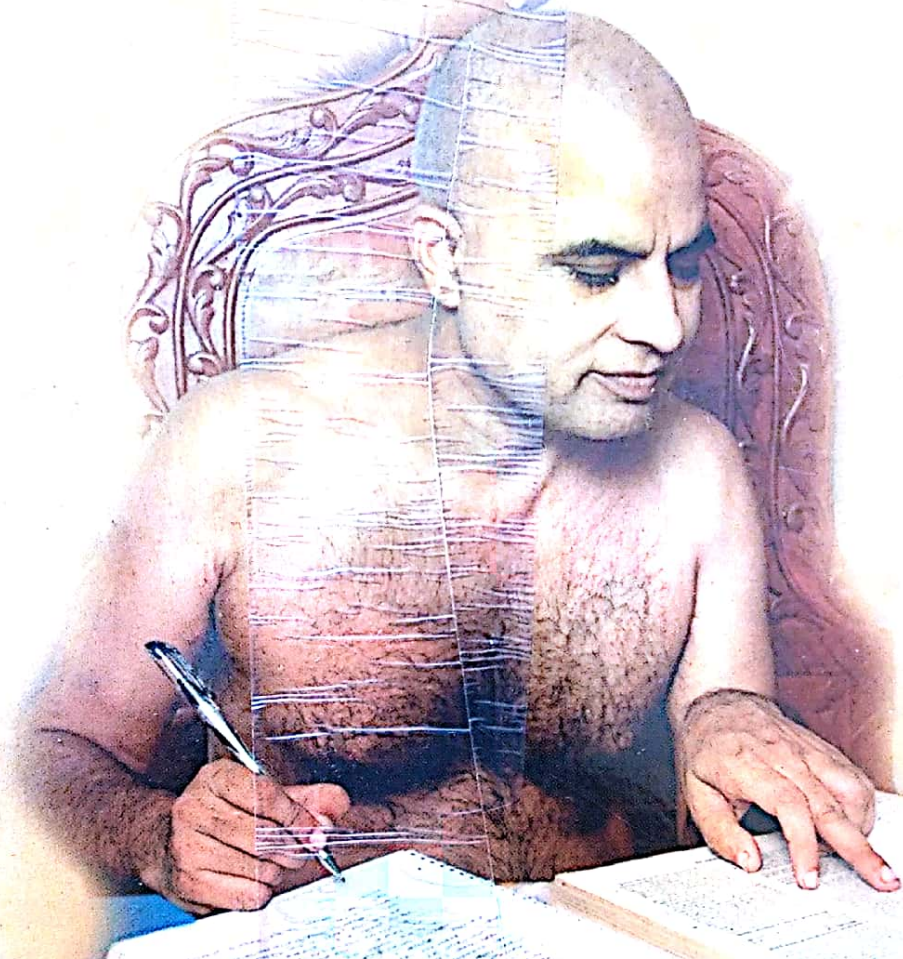


श्रीमद्भगवत्कुन्दकुन्दाचार्यविरचित कृति

बाह्य अणुवेक्या

सर्वोदया टीका



संस्कृतटीकाकारः

प. पू. गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागर जी महाराज

सम्पादन एवं अनुवाद

प्रो. दामोदर शास्त्री

श्रीमद्भगवत्कुन्दकुन्दाचार्यविरचित-कृति

बारस अणुवेक्खा

(द्वादश अनुप्रेक्षाः)

तदुपरि रचिता संस्कृत टीका

सर्वोदया

(पूर्वाद्धः)

'सर्वोदया' संस्कृतटीकाकारः

प. पू. गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागर जी महाराज

सम्पादकोऽनुवादकश्च

प्रो. डॉ. दामोदर शास्त्री



भारतीय ज्ञानपीठ

द्वितीय संस्करण : 2015 □ मूल्य : 490 रुपये

ISBN 978-81-263-4071-2 (Set)
978-93-263-5435-6 (Vol.I)

भारतीय ज्ञानपीठ

(स्थापना : फाल्गुन कृष्ण 9; वीर नि. सं. 2470; विक्रम सं. 2000; 18 फरवरी 1944)

पुण्यश्लोका माता मूर्तिदेवी की स्मृति में
साहू शान्तिप्रसाद जैन द्वारा संस्थापित
एवं

उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमा जैन द्वारा सम्पोषित

मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, तमिल आदि प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध आगमिक, दार्शनिक, पौराणिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि विविध विषयक जैन साहित्य का अनुसन्धानपूर्ण सम्पादन तथा उनके मूल और यथासम्भव अनुवाद आदि के साथ प्रकाशन हो रहा है। जैन-भण्डारों की ग्रन्थसूचियाँ, शिलालेख-संग्रह, कला एवं स्थापत्य पर विशिष्ट विद्वानों के अध्ययन-ग्रन्थ और लोकहितकारी जैन साहित्य ग्रन्थ भी इस ग्रन्थमाला में प्रकाशित हो रहे हैं।

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर ऐण्ड प्रिण्टर्स, दिल्ली-110 032

© भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित